छतरियों की वास्तुकला सम्बन्धी विभिन्न पक्षों का अध्ययन: ओरछा क्षेत्र के परिपेक्ष्य में।

डा0 शेफाली[1]

[1]प्रवक्ता, चन्दन सिंह कन्या महाविद्यालय, बरल, झासी, उ0 प्र0

ई–मेल spniranjan19961@gmail.com; +91-8126422699

शोध सारांश

बुन्देलखण्ड में मध्य सोलहवीं शताब्दी में छतरियों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। यह काल बुन्देलखण्ड में बुन्देला राजाओं के चर्मोत्कर्ष का काल था। बुन्देलखण्ड में अधिकतर छतरियों का निर्माण बुन्देला राजाओं द्वारा ही करवाया गया। अन्य भारतीय राजवंशों की भाँति ही बुन्देला राजवंश में भी राजाओं या राजकुमारों के मरणोपरान्त उनकी याद में स्थापत्य की दृष्टि से विशिष्ट एवं अद्वितीय स्मारकों का निर्माण करवाया गया। यही स्मारक छतरी के नाम से जाने जाते है। चूंकि बुन्देला राजाओं की अपनी-अपनी स्वतन्त्र जागीरें थी और ये सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में विस्तृत थे। इसीलिये छतरियाँ भी बुन्देलखण्ड के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में निर्मित की गयी है। वर्तमान में बुन्देलखण्ड का क्षेत्र मध्य-प्रदेश और उत्तर-प्रदेश का मिलाजुला भू-भाग है। चूंकि ओरछा बुन्देला राजाओं की प्रमुख राजधानी थी इसलिये बुन्देला राजाओं द्वारा विस्तृत तथा भव्य रूप से छतरियों का निर्माण ओरछा में किया गया है।

की-वर्ड: *वास्तुकला, छतरी, स्मारक, लहसुनाकार गुम्बद, प्याजीनुमा गुम्बद, पंचायतन शैली, आधारतल, शिखर, हीरानुमाकृति, ज्यामितीय डिजाइन, तोरणद्वार।*

शोध विधि

इस शोध आलेख में साक्ष्यों की पुष्टि हेतु ऐतिहासिक विधि, क्षेत्रीय अध्ययन के लिये सर्वेक्षणात्मक विधि तथा छतरियों के परिमाप सम्बन्धी विवरणों हेतु सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना

वास्तु कला का प्रारम्भ एवं विकास मानव की विकसित सभ्यता को प्रदर्शित करता है।''भवन निर्माण एवं शिल्प विज्ञान का नाम वास्तुकला है।''[1] प्रारंभिक दौर में मानव ने अपनी सुरक्षा की की दृष्टि से आवास निर्माण प्रारम्भ किये। धीरे-धीरे उसने सुविधा की दृष्टि से महत्वपूर्ण आवासों का निर्माण किया, जिसका उदाहरण हम हड़प्पा सभ्यता में देख सकते है। इसी क्रम में मानव ने धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु मन्दिर निर्माण किये। धीरे-धीरे मनुष्यों द्वारा किसी व्यक्ति विशेष की मृत्योपरान्त उसकी स्मृति में अथवा उसके अस्तित्व को बनाये रखने की दृष्टि से भी कुछ स्थापत्य सम्बन्धी प्रयोग किये गये। ये प्रारंभ में स्तूप, स्टोन केर्यन, थडागेम, पल्लीपडाई जैसे रूप में देखने को मिलते है। मध्य काल में ये अंत्येष्टि स्मारक अपने विकसित रूप में देखने को मिलते है। मध्य काल में इन स्मारकों के निर्माण की परम्परा को प्रत्येक राजवंश द्वारा अपनाया गया, कहीं छोटे रूप में तो कही बड़े आकार में। बुन्देला क्षेत्र में निर्मित बुन्देला राजाओं के अंत्येष्टि स्मारक छतरी के नाम से जाने जाते है। इन छतरियों की भव्यता तथा कलात्मक सुन्दरता को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में वास्तु कला अपने चर्मोत्कर्ष पर रही होगी।

ओरछा में निर्मित बुन्देला राजाओं की छतरियों की वास्तुकला

राजा भारतीचन्द की छतरी

इनका स्मारक मधुकर शाह द्वारा निर्मित करवाया गया था। ''यह छतरी बुन्देली शैली में निर्मित की गयी है। इसका बाहरी भाग इस्लामिक शैली में निर्मित है जो हिन्दु संस्कृति से प्रभावित प्रतीत होता है।''[2] इसके मध्य में निर्मित लहसुनाकार गुम्बद एवं चारों कोनों पर प्याजीनुमा गुम्बद के शीर्ष पर निर्मित उल्टे कमल की आकृति हिन्दु शैली की प्रतीक है। यह छतरी वर्गाकार आधारतल पर निर्मित है। इस छतरी के आधारतल पर मध्य में निर्मित गर्भगृह के चारों तरफ बने बरामदे छतरी की पंचायतन शैली को प्रदर्शित करते है। इसका गर्भगृह आयताकार है। इस छतरी में पाँच महराबदार प्रवेश द्वार बने है। इन महराबों का निर्माण इस्लामिक शैली में किया गया है। इस छतरी के भीतर बरामदे (गलियारा) में निर्मित महराबद्वार हिन्दु शैली में निर्मित है। जिनके शीर्ष पर कमलाकृति उकेरी गयी है। इन गलियारों के चारों कोने हीरानुमाकृति (डायमण्ड डिजाइन) से अलंकृत है। जो इस्लामिक शैली को प्रदर्शित करती है। हीरानुमाकृति पर्शियन स्थापत्य कला की एक विशेषता है। यह ज्यामितीय डिजाइन के अन्तर्गत आती है। **(चित्र सं. 1)**

महाराजा मधुकरशाह की छतरी

मधुकरशाह (1554-1592ईस्वी सन्)मुगल सम्राट अकबर के समकालीन थे। यह बुन्देला राजवंश के सबसे प्रतापी राजा

होने के साथ-साथ कृष्ण के प्रति विशेष भक्ति-भाव रखते थे। इन्हीं के समय में राजमहल में दीवान-ए-आम तथा चतुर्भुज मन्दिर का निर्माण हुआ था। मधुकरशाह के बड़े पुत्र रामशाह ने मधुकरशाह की छतरी का निर्माण करवाया था। राजा राम शाह की छतरी चन्देरी में निर्मित है, क्योंकि इनके छोटे भाई वीरसिंह ने जहाँगीर से गठबन्धन कर ओरछा अपने हक में कर लिया। तब रामशाह को चन्देरी की जागीर मिली। ''इस छतरी के एक भाग में पत्थर पर 'लालमौहसल' लेखांकन है। क्षेत्रीय निवासियों के अनुसार ये नियमितरूप से छतरी में स्थित मधुकर शाह और उनकी रानी की मूर्ति की पूजा करते थे। छतरी चार दीवारी के अन्दर मन्दिर स्थापत्य कला का समन्वित रूप है। इसके अन्दर मधुकरशाह एवं रानी गणेशकुँअरि की संगमरमर की मूर्ति स्थापित है।''[3] इस छतरी का शिखर पूर्णरूपेण हिन्दु शैली में निर्मित है।

छतरी के मध्य में नागर शैली का शिखर निर्मित है। इस शिखर के चारों ओर निर्मित चार छोटे-छोटे शिखर पंचायतन शैली से प्रभावित है। छतरी के शिखर के अग्रभाग में चार छोटे-छोटे छतरीनुमा गुम्बद निर्मित है। इस छतरी का प्रवेश द्वार दक्षिणी दीवार के सहारे खुली दीर्घा के रूप में निर्मित है। प्रवेशद्वार महराबदार है तथा इस पर लाल पत्थर से छज्जा निर्मित किया गया है। प्रथम तल पर मुख्यद्वार की तरफ पंचायतन को प्रदर्शित करते हुए पाँच तोरणद्वारों का निर्माण किया गया है। जिसमें से तीन द्वार एक-दूसरे से जुड़े हुए है। इनके शीर्ष पर गणेश तथा रिद्धि- सिद्धि की प्रतिमा उकेरी गयी है। इन द्वारों पर तोरणनुमा आकृति से लाल पत्थर का छज्जा निर्मित किया गया है। द्वितीय तल पर मुख्य द्वार की तरफ तीन तोरणद्वार तथा पालकीनुमा संरचना लाल पत्थर से निर्मित है। तोरणद्वारों के बायीं तथा दायीं ओर एक-एक महराबद्वार निर्मित है। छतरी के द्वितीय एवं तृतीय तल पर भी लाल पत्थर का छज्जा जोड़ा गया है। छज्जे के नीचे पान की पत्तीनुमा संरचना उकेरी गयी है। शिखर तल कमल की पंखुड़ीनुमा संरचना से अलंकृत है। छतरी की दीवारों पर चारों तरफ वर्गाकार एवं आयताकार आकृति के भीतर महराबों की आकृतियाँ निर्मित है। छतरी की दीवारों पर गवाक्ष भी निर्मित है। आधारतल पर निर्मित गवाक्षों के भीतर जालीनुमा संरचना निर्मित है।(चित्र सं. 2)

महाराजा वीरसिंह देव की छतरी

वीर सिंह देव के मुगल शासक जहाँगीर से दोस्ताना सम्बन्ध थे।''जहाँगीर अपने पिता अकबर के करीबी अबुल फजल से बहुत अधिक विद्वेष रखता था। अतः उसने ओरछा के राजा वीर सिंह बुन्देला से जो स्वयं भी कुछ समय तक विद्रोहियों में शामिल रहा था, अबुल फजल की हत्या करने को कहा। वीर सिंह देव ने जहाँगीर के कहने पर अबुल फजल पर आक्रमण कर उसकी हत्या करवा दी थी।''[4] वीर सिंह देव कीइस छतरी का निर्माण कार्य महाराजा जुझार सिंह के शासन काल में प्रारम्भ हुआ था। परन्तु विभिन्न राजनैतिक घटनाक्रमों के कारण इसका निर्माण कार्य पूर्ण नही हो सका। यह छतरी चबूतरे पर बनी है जिसे बेतवा नदी का पवित्र जल स्पर्श करता है। छतरी का मुख्य प्रवेश द्वार नदी की तरफ है। नदी की तरफ द्वार करने का उद्देश्य यह है कि मृतक राजा अपनी नयी दुनिया में पहुँचने के बाद भी प्राकृतिक सुन्दरता तथा नदी में स्नान का आनन्द ले पाये। यह तीन मंजिला स्मारक बुन्देला राजा के व्यक्तित्व के अनुरूप उचित श्रद्धान्जली प्रतीत होती है। जिसने न केवल अपने क्षेत्र राज्य का विस्तार किया बल्कि अपने प्रशासन को भी सुसंगठित किया।

उसके शासन काल मे अत्यधिक धन राजकोष में एकत्रित किया गया, जिसका व्यापक रूप से उपयोग निर्माण क्षेत्र में किया गया । ऐसा कहा जाता है कि ''अपने 52 वें जन्मदिन के अवसर पर उसने ओरछा, आगरा, मथुरा, वृन्दावन तथा बनारस में 52 भवनों का निर्माण करवाया। उसे भारत के राजनीतिक नक्शे में बुन्देलखण्ड को स्थान दिलवाने का श्रेय जाता है।''[5] यही कारण है कि उसकी छतरी उसके व्यक्तित्व के समान ऊँची है। यह छतरी त्रितलीय योजना में निर्मित हैं। प्रत्येक मंजिल के सन्धि स्थल पर तोड़ो पर आधारित छज्जे निर्मित है। आधारतल तथा द्वितील तल में चारों दीवारों पर तीन-तीन महराबद्वार निर्मित है। महराबद्वार इण्डो-इस्लामिक शैली में निर्मित है। आधारतल पर बन्दरवाजा परम्परा में पान की पत्ती का अलंकरण किया गया है। छतरी की दीवारों पर ब्रेकिट्स में भिन्न-भिन्न आकृतियाँ निर्मित है। समय के प्रभाव के कारण मुख्य एवं अन्य कक्षों के शिखर एवं छज्जों के अवशेष ही दिखायी देते है। इसके शिखर अपूर्ण स्थिति में प्रतीत होते है। (चित्र सं. 3)

सेनापति कृपा राम गौर की छतरी

कृपाराम गौर राजा वीर सिंह देव के सेनापति थे।''उन्होंनें अपनी वीरता तथा शत्रु के खिलाफ प्राप्त अपनी विजयों से अत्यधिक मान-सम्मान प्राप्त कर लिया था।''[6] वह अकेले ऐसे व्यक्ति है जो राज परिवार के न हो ते हुए भी अंत्येष्टि स्मारक से सम्मानित है। ओरछा में बेतवा नदी के तट पर बुन्देला राजाओं के साथ सेनापति कृपा राम की भी छतरी निर्मित है। इनकी छतरी देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि व्यक्तित्व के अनुसार छतरी का निर्माण करवाया जाता था। सेनापति कृपाराम की छतरी उनके व्यक्तित्व के अनुसार अन्य छतरियों की अपेक्षा संरचनात्मक दृष्टि से छोटे रूप में निर्मित है। यह छतरी वर्गाकार चबूतरे पर वर्गाकार गर्भगृह के साथ निर्मित की गयी है। यह छतरी द्वितलीय है तथा इसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि किसी कारणवश इसका निर्माण कार्य अधूरा रह गया है। छतरी के निर्माणकर्त्ता की जानकारी तक हम नही पहुँच पाये। (चित्र सं. 4)

राजा पहाड़ सिंह की छतरी

पहाड़ सिंह वीरसिंह देव के दूसरे बेटे तथा जुझार सिंह के छोटे भाई थे।''मुगल शासक शाहजहाँ द्वारा जून 1642 ईस्वी में ओरछा के शासक बनाये गये। 1654 ईस्वी में इनका स्वर्गवास हो गया। यह छतरी सुजान सिंह के द्वारा लगभग 1654 ईस्वी और 1673 ईस्वी मे बनवायी गयी थी।''[7] छतरी का निर्माण दो चरणों में किया गया। प्रथम चरण सोलहवीं शताब्दी में वर्गाकार गर्भगृह तथा आयताकार गलियारा बनाया गया। इसमें समतल छत निर्मित है। द्वितीय चरण सत्रहवीं शताब्दी में निर्मित किया गया। इसमें गुम्बदाकार शिखर जोड़े गये तथा छज्जों के नीचे सुन्दर चित्र बनाये गये है। मध्य के गुम्बद के छज्जे के नीचे दक्षिणीएवं पूर्वी भित्ति पर विक्रम संवत् 1735, 1732, 1740 के लेख उत्कीर्ण है।

इस छतरी के प्रवेश द्वार के महराब हिन्दु शैली में बने है। इनके शीर्ष पर कमलाकृति उकेरी गयी है। छतरी की बाह्य दीवारों पर वर्गाकार एवं आयताकार आकृति के भीतर महराबनुमा आकृति उकेरी गयी है। इस छतरी पर लाल पत्थर से छज्जा जोड़ा गया है। इसके नीचे पान की पत्ती की आकृति उकेरी गयी है। छतरी के मध्य में वर्गाकार गर्भगृह है। गर्भगृह के चारों ओर निर्मित गलियारा पंचायतन शैली प्रभाव को परिलक्षित करता है। इस छतरी के चारों कोनों पर वर्गाकार कक्षों के ऊपर इस्लामिक गुम्बद निर्मित है। प्रत्येक गुम्बद के चारों कोनों पर छोटी-छोटी गुम्बदनुमा आकृति निर्मित है। यह आकृति चार स्तम्भों के ऊपर निर्मित की गयी है। ये गुम्बद प्याजीनुमा आकृति में निर्मित है। छतरी की त्रितलीय संरचना के ऊपर नागर शैली का शिखर स्थित है। इस छतरी के द्वितीय तल के मध्य में इस्लामिक शैली में महराबद्वार निर्मित है। इस छतरी में विभिन्न प्रकार के महराबों को निर्मित किया गया है, यथा- बौद्ध शैली के धमेख स्तूप सातवीं शताब्दी में निर्मित महराब, गोथिक शैली, 1500 ईस्वी के महराब इस्लामिक शैली, सत्रहवीं शताब्दी के महराब।(चित्र सं. 5)

एक अहाते में छतरियों का समूह

इस अहाते के भीतर पाँच छतरियाँ निर्मित है। इसका प्रवेशद्वार दक्षिण दिशा में स्थित है। यह छतरियाँ चारबाग बगीचे की शैली में निर्मित है। अहाते के भीतर का बगीचा चार बराबर भागों में विभाजित है। इन चार भागों के मध्य में वर्गाकार आधारतल निर्मित है, जिसके मध्य में एक हौज निर्मित है। चार भागों में विभाजित बगीचे में चार मार्ग भी निर्धारित किये गये है। एक रास्ता प्रवेश द्वार से प्रारम्भ होता है और आयताकार आधारतल तक पहुँचता है। अन्य तीन रास्ते पूर्व एवं पश्चिम दिशा में स्थित छतरियों तक पहुँचते है। उत्तरी रास्ता अहाते की दीवार तक जाता है। इस अहाते मे स्थित छतरियों में दो छतरियाँ दायें तरफ है तथा तीन छतरियाँ बायें तरफ है। लेकिन पूर्व पक्ष में दो समाधि स्मारक स्थित है। चार छतरियाँ संरचना, सजावट एवं वास्तु शैली में समान हैं। पाँचवीं छतरी संरचना में अन्य छतरियों की अपेक्षा थोड़ी छोटी लेकिन वास्तु शैली की दृष्टि से अत्यन्त मनोहारी बनी हुई है।

महाराजा सुजान सिंह की छतरी

महाराज सुजान सिंह के 1672 ईस्वी में निधन के पश्चात् ''उनके छोटे भाई इन्द्रमणि द्वारा उनकी छतरी का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया गया। जिसे उनके पुत्र राजा जसवंत सिंह द्वारा पूर्ण करवाया गया। छतरी का आधारतल वर्गाकार है। इसके मध्य में गर्भगृह एवं चारों ओर महराबदार द्वारों से युक्त गलियारे बने है। इनके कोनों पर वर्गाकार कक्षों की संरचना है।''[8] मध्य का गर्भगृह सर्वतोभद्र शैली मे निर्मित है। जिसमें चारों ओर प्रवेश द्वार है। इसका वितान ऊँचा है। छतरी त्रितलीय योजना में निर्मित है। आधारतल पर चारों दिशाओं में निर्मित पाँच-पाँच प्रवेशद्वार पंचायतन शैली से प्रभावित है। ये प्रवेश द्वार महराबनुमा बने है। द्वितीयतल पर भी चारों दीवारों पर पाँच-पाँच महराबद्वार निर्मित है। छतरी में निर्मित महराब द्वार हिन्दु शैली में निर्मित है। बन्दरवाजा

परम्परा से प्रभावित आधारतल पर पान की पत्ती का अलंकरण है।

द्वितीय तथा तृतीय तल पर लाल पत्थर का छज्जा जोड़ा गया है। इसके नीचे पान की पत्ती की आकृति उकेरी गयी है। द्वितीय तल के मध्य में बाहर की ओर लाल पत्थर से पालकीनुमा संरचना निर्मित है। छतरी की सभी बाह्य दीवारों पर छोटे-छोटे ब्रेकिटों के भीतर महराबदार संरचना निर्मित है। छतरी के शीर्ष पर मध्य में नागर शैली में शिखर निर्मित है। शिखर के चारों ओर चार बड़े गुम्बद निर्मित है। इन गुम्बदों के चारों कोनों पर चार छोटे-छोटे छतरीनुमा गुम्बद निर्मित है।(चित्र सं. 6)

महाराजा इन्द्रमणि की छतरी

महाराजा सुजान सिंह के निःसंतान निधन के पश्चात् उनके भाई इन्द्रमणि ओरछा के उत्तराधिकारी बने।''राजा इन्द्रमणि की छतरी का निर्माण उनके पुत्र जसवंत सिंह द्वारा करवाया गया। परिसर के दक्षिण-पश्चिम कोने में निर्मित इस छतरी की आधारतल योजना वर्गाकार है। जिसके भीतर मध्य में वर्गाकार गर्भगृह तथा आयताकार गलियारा निर्मित है। छतरी त्रितलीय योजना में निर्मित है।''[9] आधारतल पर पाँच महराबनुमा प्रवेशद्वार निर्मित है। इन पर कमलाकृति का अलंकरण किया गया है। आधारतल के समान ही द्वितीयतल पर भी महराबद्वार निर्मित है। छतरी में निर्मित महराबद्वार हिन्दु शैली में निर्मित है। प्रत्येक महराबद्वार के शीर्ष पर अर्द्धमहराब की आकृति के गवाक्ष निर्मित है। छतरी के तीनों तलों पर पान की पत्ती का अलंकरण किया गया है। द्वितीय व तृतीय तल पर लाल पत्थर का छज्जा जोड़ा गया है। छतरी की दीवारों पर छोटे-छोटे ब्रेकिट्स में महराबनुमा आकृति निर्मित है।''छतरी का शिखर नागर शैली में निर्मित है। शिखर के चारों ओर वर्गाकार कक्षों पर आधारित प्याजीनुमा गुम्बद निर्मित है।''[10] गुम्बद का निम्न भाग चारों तरफ से कमल की कलियों से अलंकृत है। गुम्बद के चारों कोनों पर छोटे-छोटे चार छतरीनुमा गुम्बद भी निर्मित है। छतरी के गर्भगृह की भीतरी दीवारें भी स्थापत्य के भिन्न-भिन्न नमूनों से अलंकृत है। गर्भगृह के भीतर की छत अर्थात् शिखर के भीतरी भाग पर चित्रकारी भी की गयी है। परन्तु सुरक्षा के अभाव ने यह क्षतिग्रस्त हो चुकी है।(चित्र सं. 7)

महाराजा जसवंत सिंह की छतरी

महाराजा जसवंत सिंह ने ईस्वी सन् 1675-1684 तक ओरछा में शासन किया।''मुगल बादशाह औरंगजेब ने 1683 ईस्वी में राजा जसवंत सिंह को खिल्वत प्रदान की। 1684 ईस्वी में जसवंत सिंह की मृत्यु हो गयी। महारानी अमरकुँवर द्वारा उनकी छतरी का निर्माण करवाया गया।''[11] यह छतरी वर्गाकार आधार पर निर्मित है। द्वितलीय योजना में निर्मित छतरी में वर्गाकार गर्भगृह है। इस छतरी में गलियारों का अभाव है। आधारतल तथा द्वितीयतल पर पान की पत्ती की सजावट की गयी है। द्वितीयतल पर लाल पत्थर का छज्जा जोड़ा गया है। छतरी का शीर्ष भाग उल्टे कमलाकार गुम्बद के रूप में निर्मित है। इसके चारों कोनों पर चार छोटे-छोटे वर्गाकार कक्षों पर छतरीनुमा गुम्बद निर्मित है। छतरी के आधार तल पर दो द्वार है। प्रथम मुख्य प्रवेशद्वार और दूसरा प्रवेश द्वार के विपरीत स्थित है। इस छतरी में निर्मित प्रवेश द्वार पर बाहरी और भीतरी दोनों पृष्ठों पर सर्पाकार महराब निर्मित है। सर्पाकार महराब के भीतरी पृष्ठ पर डायमण्ड शेप या जालीनुमा आकृति उकेरी गयी है।महराब के शीर्ष पर कमलाकृति उकेरी गयी है। कमलाकृति के ऊपर बतखनुमा पक्षी का बोडर चित्रित है। द्वार के बायीं तथा दायीं ओर छोटे-छोटे ब्रेकिट्स में अर्द्ध महराबदार आकृति निर्मित है। प्रवेश द्वार के विपरीत द्वार पर भी इसी प्रकार का अलंकरण है। छतरी के गर्भगृह की दीवारें भी इसी प्रकार के अलंकरण से सुसज्जित है। गर्भगृह की छत पर चक्राकार फूल चित्रित है। वितानों में चारों कोनों पर एक-एक पालकीनुमा संरचना निर्मित है तथा मध्य में महराबों की संरचना निर्मित है। पालकी के बाहरी ओर महराबद्वार निर्मित है।(चित्र सं. 8)

महाराजा भगवंत सिंह की छतरी

भगवंत सिंह (1687 से 1689 ईस्वी) की ''छतरी का निर्माण महराजा उदोत सिंह के द्वारा करवाया गया। यह छतरी भी स्थापत्य की दृष्टि से महाराजा इंद्रमणि की छतरी के सदृश्य है। इस छतरी के मध्य में सर्वतोभद्रशैली में वर्गाकार गर्भगृह एवं चारो ओर तीन-तीन महराबदार द्वार युक्त गलियारों की संरचना है।''[12] प्रत्येक कोने पर वर्गाकार कक्ष है जिनके द्वार दोनों ओर के बरामदों में खुलते है। छतरी त्रितलीय योजना में निर्मित है। जिसमें आधार व द्वितीय तल मे निर्मित पाँच-पाँच महराबद्वार पंचायतन को प्रदर्शित करते है। महराबद्वार हिन्दु शैली में निर्मित है। इस छतरी के आधारतल

पर निर्मित महराबीय प्रवेशद्वार के शीर्ष पर कमलाकृति निर्मित है। जिसके ऊपर अर्द्धमहराबीय गवाक्ष निर्मित है। तीनों तलों पर पान की पत्ती का अलंकरण किया गया है। इसके साथ ही द्वितीय तथा तृतीय तल पर लाल पत्थर का छज्जा जोड़ा गया है।''नागर शैली में निर्मित शिखर के चारों ओर वर्गाकार आधार पर चार गुम्बद निर्मित है। जिनके निम्न भाग कमल की कली से अलंकृत है। प्रत्येक गुम्बद के चारों कोनों पर छोटी-छोटी छतरीनुमा गुम्बद निर्मित है।''[13] गर्भगृह की भितरी दीवारें भी अलंकृत है। गर्भगृह की भीतरी छत पर चक्राकार फूल की आकृति उकेरी गयी है। छतरी की बाह्य दीवारों पर छोटे-छोटे ब्रेकिट्स में महराबदार आकृतियाँ बनायी गयी है।(चित्र सं. 9)

महाराजा सावंत सिंह की छतरी

महाराजा पृथ्वी सिंह (सन् 1736-1752 ईस्वी) के पुत्र पूरन सिंह की शिकार खेलते समय मृत्यु हो जाने के कारण पौत्र सावंत सिंह 1752 ईस्वी में उत्तराधिकारी बने।''सावंत सिंह ने 1765 ईस्वी तक शासन किया। मुगल बादशाह शाह आलम के द्वारा सावंत सिंह को महेन्द्र की उपाधि प्रदान की गयी थी।''[14] सावंत सिंह के पुत्र हेत सिंह द्वारा उनकी छतरी का निर्माण करवाया गया। छतरी की तल योजना वर्गाकार है। छतरी का गर्भगृह वर्गाकार है और गलियारा अलंकृत है। इस छतरी के पाश्र्व भाग में एक गुम्बदनुमा आकृति है। जिसके भीतर शिवलिंग स्थापित है। यह शिवलिंग धन के लालच में लोगों द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिया गया है। यह छतरी इण्डो-इस्लामिक शैली में निर्मित है। छतरी का आधारतल चारों ओर से पान की पत्ती से अलंकृत है। यह अलंकरण हिन्दु शैली के बन्दरवाजा परम्परा से सम्बन्धित है। आधारतल एवं द्वितीय तल की चारों दीवारों पर निर्मित पाँच-पाँच महराबद्वार पंचायतन शैली से प्रभावित है। आधारतल पर निर्मित महराबद्वार गोथिक तथा बौद्ध शैली द्वितीयतल, तृतीयतल तथा शीर्ष पर लाल पत्थर का छज्जा जोड़ा गया है। छतरी की दीवारें छोटे-छोटे ब्रेकिट से अलंकृत है। इन ब्रेकिटों में महराबदार आकृतियाँ उकेरी गयी है। छतरी के शीर्ष पर मध्य में नागर शैली में निर्मित शिखर है और चारों तरफ चार गुम्बद निर्मित है। चारों गुम्बद चारों तरफ से चार छोटे-छोटे छतरीनुमा संरचना के गुम्बदों से अलंकृत है।(चित्र सं. 10)

बंका उम्मेद सिंह की छतरी

बंका उम्मेद सिंह जो बंका पहाड़ के जमींदार थे तथा ओरछा किले के किलेदार भी थे। इनकी छतरी भी इसी प्रांगण में निर्मित है।''इनकी मृत्यु 1744 ईस्वी में हुई थी। ये हरदौल के वंशज थे तथा महाराजा उदोत सिंह के भाई राय सिंह के पुत्र थे। यद्यपि बंका उम्मेद सिंह राज परिवार से सम्बन्धित तो है फिर भी उत्तराधिकारी राजा की श्रेणी में नहीं आते है।''[15] इनका स्मारक छतरी परिसर से ही संलग्न है। यह निर्माण योजना में आयताकार है। तथा इसमें भी अन्य छतरियों की भाँति मण्डप निर्मित है। इसके अग्र भाग में तीन महराबीय द्वार है तथा पाश्र्व भागों में एक-एक महारबीय द्वार निर्मित है। संरचना में उम्मेद सिंह, उनकी पत्नी तथा सहचारी की प्रतिकृति निर्मित है। इस स्मारक में तीन सिंहों की आकृति भी निर्मित है। गर्भगृह के ऊपर एक छोटा गुम्बद निर्मित किया गया है ।(चित्र सं. 11)

निष्कर्ष

इन छतरियों की वास्तुकला मध्यकालीन स्थापत्य कला के क्षेत्र में विशेष स्थान रखती है। बुन्देलखण्ड में इन छतरियों की वास्तुकला का चर्मोत्कर्ष बुन्देला राजाओं के प्रारम्भिक तथा मध्य काल में दिखायी देता है। मन्दिर वास्तु कला तथा किला वास्तुकला के मिश्रित अलंकरण छतरी वास्तु कला में देखने को मिलते है। इन छतरियों पर सांगोपांग रूप से चूने का प्लास्टर किया गया है। बाह्य भित्तियों पर छद्म महराब अलंकरण का अंकन मिलता है। जो छतरी की भव्यता में वृद्धि करने के लिये प्रयुक्त किया गया है। छतरी की आन्तरिक दीवारों पर ओरछा क्षेत्र में भित्ति चित्रों का लगभग अभाव सा है। इन छतरियों के सम्मुख भाग में विशाल उद्यान का प्रावधान किया गया है। यहाँ से अनेक लघु आकार की छतरियाँ भी प्राप्त होती है। जो आपेक्षाकृत अधिक बाद की प्रतीत होती है। इनका स्थापत्य भी साधारण लघु मन्दिारों की भाँति है। एक ही परिसर क्षेत्र में निर्मित होने के कारण ये निश्चय ही परवर्ती बुन्देला राजवंश की होगी।

शोध आलेख सम्बन्धी सारणी तथा चित्र -

राजा भारतीचन्द की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है

	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	15.30x15.30
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.65
3	स्तम्भ की चौड़ाई	1.00

4	परिक्रमा गृह की माप	5.50x1.70

राजा मधुकरशाह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18x18
2	बाहरी दीवार की चैड़ाई	1.20
3	बुर्ज का व्यास	1.00
4	परिक्रमा गृह की माप	6.20x1.95

राजा वीरसिंह देव की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	25x25
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.60
3	चबूतरे की ऊँचाई	1.00
4	परिक्रमा गृह की माप	8.50x4.20

सेनापति कृपा राम गौर की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	10x10
2	छतरी में प्रवेश की चौड़ाई	1.50
3	गर्भगृह की माप	5.50x5.50

राजा पहाड़ सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18.20x18.20
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.50
3	परिक्रमा गृह की माप	7.50x2.90
4	गर्भगृह की माप	6.50x6.50

राजा सुजान सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	19.90 x 19.90
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.85
3	परिक्रमा गृह की माप	6.90x2.70
4	गर्भगृह की माप	6.85x6.85

राजा इन्द्रमणि की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18.85x18.85
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.45
3	परिक्रमा गृह की माप	6.50x2.50
4	गर्भगृह की माप	6.30x6.30

राजा जसवंत सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18.75x18.75
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.55
3	परिक्रमा गृह की माप	6.40x2.80
4	गर्भगृह की माप	6.45x6.45

राजा भगवंत सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18.65x18.65
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.50
3	परिक्रमा गृह की माप	6.65x2.85
4	गर्भगृह की माप	6.35x6.35

राजा सावंत सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है –

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	13.50x13.50
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.90
3	परिक्रमा गृह की माप	5.30x2.10

राजा वीरसिंह देव की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	25x25
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.60
3	चबूतरे की ऊँचाई	1.00
4	परिक्रमा गृह की माप	8.50x4.20

सेनापति कृपा राम गौर की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	10x10
2	छतरी में प्रवेश की चौड़ाई	1.50
3	गर्भगृह की माप	5.50x5.50

राजा पहाड़ सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18.20x18.20
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.50
3	परिक्रमा गृह की माप	7.50x2.90
4	गर्भगृह की माप	6.50x6.50

राजा सुजान सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	19.90 x 19.90
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.85
3	परिक्रमा गृह की माप	6.90x2.70
4	गर्भगृह की माप	6.85x6.85

राजा इन्द्रमणि की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18.85x18.85
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.45
3	परिक्रमा गृह की माप	6.50x2.50
4	गर्भगृह की माप	6.30x6.30

राजा जसवंत सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18.75x18.75
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.55
3	परिक्रमा गृह की माप	6.40x2.80
4	गर्भगृह की माप	6.45x6.45

राजा भगवंत सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है-

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	18.65x18.65
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.50
3	परिक्रमा गृह की माप	6.65x2.85
4	गर्भगृह की माप	6.35x6.35

राजा सावंत सिंह की छतरी की विस्तृत माप निम्नलिखित है –

क्र.स.	संरचना के भाग	माप (मीटर में)
1	चबूतरे की माप	13.50x13.50
2	बाहरी दीवार की चौड़ाई	1.90
3	परिक्रमा गृह की माप	5.30x2.10

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सिंह, राज किशोर एवं उषा यादव, प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, 1994, पृ0 29।

2. मिश्रा, ओम प्रकाश, जैन, मनोज कुमार, ट्रडिशनल आर्किटेक्चर सीनोटाॅप्स् आॅफ बुन्देलखण्ड, जर्नल आॅफ डिर्पाटमेण्ट आॅफ आर्कियोलाॅजी आर्किव एण्ड म्यूजियम, पृ0 69।

3. खान, सफिया, बिल्डिंग ट्रडिशन इन बुन्देलखण्ड 1000 - 1700, शोध प्रबन्ध, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, 2012, पृ0 147।

4. दतिया गजेटियर, संस्कृति विभाग, मध्य प्रदेश, भोपाल, 1992, पृ0 30।

5. खान, सफिया, बिल्डिंग ट्रडिशन इन बुन्देलखण्ड 1000 - 1700, शोध प्रबन्ध, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, 2012, पृ0 151-152।

6. वही, पृ0 168।

7. वही, पृ0 153-154।

8. मिश्रा, ओम प्रकाश, जैन, मनोज कुमार, ट्रडिशनल आर्किटेक्चर सीनोटाॅप्स् आॅफ बुन्देलखण्ड, पृ0 71।

9. वही, पृ0 72।

10. वही, पृ0 72।

11. खान, सफिया, बिल्डिंग ट्रडिशन इन बुन्देलखण्ड 1000 - 1700, शोध प्रबन्ध, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, 2012, पृ0 156-158।

12. मिश्रा, ओम प्रकाश, जैन, मनोज कुमार, ट्रडिशनल आर्किटेक्चर सीनोटाॅप्स् आॅफ बुन्देलखण्ड, पृ0 72-73।

13. वही, पृ0 72-73।

14. वही, पृ0 72-73।

15. खान, सफिया, बिल्डिंग ट्रडिशन इन बुन्देलखण्ड 1000 - 1700, शोध प्रबन्ध, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, 2012, पृ0 167-168।

1 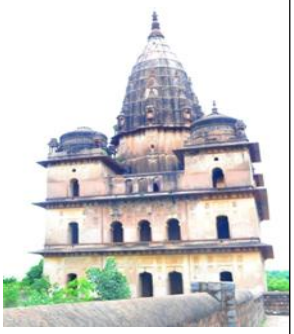	2
3	4

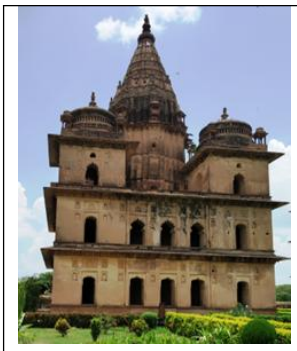

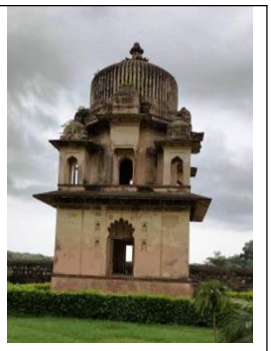

5

6